Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

40

रश्मिरथी: एक उपेक्षित नायक की दास्तान

नागेश भरत सूर्यवंशी
शोधछात्र
श्रीराम विद्यालय, पिंपलगाँव मालवी अहिल्यानगर

डॉ.संजयकुमार नंदलाल शर्मा
हिंदी विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर अनुसंधान केंद्र
कला,वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय तलोदा

परिचय

भारतीय समाज में विविधताओं और बहुलताओं का संगम है, किंतु इस विविधता में उपेक्षित वर्ग—जैसे दलित, पिछड़े, महिलाएँ और आदिवासी—आज भी सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हाशिए पर जीवनयापन कर रहे हैं। ये वर्ग भारतीय सभ्यता व समाज के अभिन्न अंग हैं, परंतु सदियों से इनका शोषण, भेदभाव तथा अधिकारों का हनन होता आया है। उनके अनुभव, संघर्ष और आत्म-सम्मान की पुकार साहित्य और समाज के लिए जागरूक करने वाली प्रेरणा हैं। उपेक्षित वर्ग की व्यथा, उनके सपनों और संघर्षों की अभिव्यक्ति सामाजिक समरसता, समानता और मानवता की नई राह प्रशस्त करती है। अतः ऐसे वर्ग के सशक्तिकरण, अधिकारों की बहाली और मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास आधुनिक साहित्य और विचार-संवाद का महत्वपूर्ण विषय है। इसी हेतु आज के शोध आलेख में एक ऐसे ही ऐतिहासिक व्यक्तित्व के दर्शन करने का मानस है जो सर्वहारा वर्ग का उपेक्षित नायक है जो महाभारत के महान वीर कर्ण है ।

शोध का उद्देश्य

शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य यह स्थापित करना है कि किस प्रकार कर्ण महाभारत और रश्मिरथी — दोनों में उपेक्षित नायक के रूप में उभरता है, उसकी उपेक्षा समाज की संरचनात्मक विडंबनाओं का प्रतीक है, और दिनकर ने उसे आधुनिक मानव-मूल्य, संघर्ष और स्वाभिमान का वाहक बना दिया है।

अपनी वाणी के बाणों से अग्नि वर्षा करने वाले रामधारी सिंह 'दिनकर जी' उन महाकवियों में है जो प्राचीन भारत के गौरव में अतीत पर मुग्ध हो उठते हैं और वर्तमान के शोषण उत्पीड़न पाटन और विश्व में के प्रति जिनके हृदय हाहाकार करते हुए हुँकार कर विद्रोह कर उठता है नि:संदेह दिनकर जी का काव्य दलित मानवता और सिसकती हुई करुणा का काव्य है आधुनिक युग की नई गीता के रूप में इनका 'रश्मिरथी' यह खंडकाव्य है।

रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'रश्मिरथी' हिंदी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण खंडकाव्य है। इस खंडकाव्य का केंद्रीय पात्र महाभारत के महान वीर कर्ण हैं, जिनका जीवन संघर्ष, बलिदान और उपेक्षा से भरा हुआ है। 'रश्मिरथी' शब्द का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिसका रथ सूर्य की रश्मियों से प्रकाशित हो, और यह काव्य कर्ण के चरित्र की वह महानता और प्रकाशमान वीरता को दर्शाता है।

'रश्मिरथी' में दिनकर ने न केवल कर्ण के शौर्य और दानवीरता का चित्रण किया है, बल्कि जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय के प्रति कड़ा प्रश्न भी उठाया है। यह काव्य समकालीन समाज में व्याप्त सामाजिक असमानताओं पर भी विचार करता है और एक संदेश देता है कि मनुष्य का मूल्य उसके जन्म, जाति या पद से नहीं, बल्कि उसके कर्मों और गुणों से आँका जाना चाहिए। कर्ण की जीवनगाथा में उसके अनेक त्रासदीपूर्ण अनुभवों के बावजूद उसके अडिग साहस और मानवीय मूल्यों को प्रतिपादित किया गया है। इस प्रकार रश्मिरथी एक प्रेरणादायक एवं विचारोत्तेजक खंडकाव्य है, जो समाज, न्याय और मानवता के मूल्यों पर प्रकाश डालता है।

"हमने देखा सत्य सदा पराजित होते दरबारों में,
नीति बिक गयी सरेआम खड़े ढोंग बाज़ारों में।
इंसाफ यहाँ टूटी-फूटी भीख, मिली मजबूरों को,
कर्ण कलंकित अब भी है, जयजयकार कौरवों को।
राजा वही बनता है आज भी,
जो निष्ठुर है, संहारक है,
वंचित की आस तिरोहित हुई,
बंद पड़ी सरकारों में।" 1

यह खंडकाव्य हिंदी साहित्य में एक अनमोल रत्न की भाँति विद्यमान है और हमें जीवन के संघर्षों से न घबराने तथा अपने आदर्शों के प्रति संकल्पित रहने की प्रेरणा देता है।

शोध निबंध का मुख्य उद्देश्य यह स्थापित करना है कि किस प्रकार कर्ण महाभारत और *रश्मिरथी* — दोनों में उपेक्षित नायक के रूप में उभरता है, उसकी उपेक्षा समाज की संरचनात्मक विडंबनाओं का प्रतीक है, और दिनकर ने उसे आधुनिक मानव-मूल्य, संघर्ष और स्वाभिमान का वाहक बना दिया है। दिनकरजी ने कर्ण को समाज के उपेक्षित, दलित, संघर्षशील वर्ग का प्रतीक बनाकर उसकी पीड़ा, आत्मगौरव और

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

छटपटाहट को *रश्मिरथी* में अत्यंत मार्मिक और व्यंग्यात्मक स्वरूप में चित्रित किया है, जिससे वह उपेक्षाग्रस्त वर्ग के संघर्ष और अस्मिता का प्रतिनिधि बन जाता है।

जातिवाद के सन्दर्भ में महर्षि याज्ञवल्क्य कर्ण से कहते हैं कि "इसका तात्पर्य है कि तेरे सत् तन के भीतर कोई संस्कारी व्यक्तित्व बैठा है, जो वेद मन्त्र को उसकी ध्वनि से पहचान रहा है। तू बाहर भले ही सूत हो पर भीतर से नहीं।"[2]

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, निबंधकार और चिंतक थे, जिन्हें 'राष्ट्रकवि' के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म 23 सितम्बर, 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था और वे मुख्यतः अपनी ओजस्वी, राष्ट्रीय-प्रेरणा तथा समाज-सुधारक कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। दिनकरजी का बचपन गरीबी और संघर्ष में बीता। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में प्राप्त की और आगे की पढ़ाई मुजफ्फरपुर से की। शिक्षा पूरी करने के बाद वे एक कॉलेज में प्रोफेसर बने और बाद में उच्च अध्ययनकार्य एवं अनुसंधान के क्षेत्र में सक्रिय रहे।

दिनकरजी ने वीर रस, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी कई प्रमुख काव्य-कृतियाँ जैसे *रश्मिरथी*, *परशुराम की प्रतीक्षा*, *कुरुक्षेत्र* और *उर्वशी* लिखीं। उन्होंने गद्य में भी संस्कृति के चार अध्याय जैसी कालजयी कृतियों से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। दिनकरजी को पद्म भूषण, भारतीय ज्ञानपीठ और अन्य अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं।

अपनी वाणी के बाणों से अन्याय पर वार करने वाले रामधारी सिंह 'दिनकर' जी उन महाकवियों में हैं जो प्राचीन भारत के गौरव से अतिवृष्ट पर पड़े हुए हैं और वर्तमान के शोषण, उत्पीड़न और विषमता के प्रति जिनके हृदय हाहाकार करते हुए हुंकार कर विद्रोह कर उठते हैं। निःसंदेह दिनकर जी का काव्य दलित मानवता और सिसकती हुई करुणा का काव्य है। आधुनिक युग की नई गीता के रूप में इनका *रश्मिरथी* यह खंडकाव्य है।

रामधारी सिंह दिनकरजी द्वारा रचित *रश्मिरथी* हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण खंडकाव्य है। इस खंडकाव्य का केंद्रीय पात्र महाभारत के महान वीर कर्ण हैं, जिनका जीवन संघर्ष, दलितत्व और उपेक्षा से भरा हुआ है। *रश्मिरथी* शब्द का अर्थ है—ऐसा व्यक्ति जिसका …रथ सूर्य की रश्मियों से प्रकाशित हो, और यह काव्य कर्ण के चरित्र की वह महानता और प्रकाशमान वीरता को दर्शाता है।

रश्मिरथी में दिनकर ने केवल कर्ण के शौर्य और दानवीरता का चित्रण किया है, बल्कि जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय के प्रति कड़ा प्रश्न भी उठाया है। यह काव्य समकालीन समाज में व्याप्त सामाजिक असमानताओं पर भी विचार करता है और एक संदेश देता है कि मनुष्य का मूल्य उसके जन्म, जाति या पद से नहीं, बल्कि उसके कर्मों और गुणों से आँका जाना चाहिए। कर्ण की जीवनगाथा में उसके अनेक त्रासदीपूर्ण अनुभवों के बावजूद उसके अडिग साहस और मानवीय मूल्यों को प्रतिबिंबित किया गया है। इस प्रकार *रश्मिरथी* एक प्रेरणादायक एवं विचारोत्तेजक खंडकाव्य है, जो समाज, न्याय और मानवता के मूल्यों पर प्रकाश डालता है।

"पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से
रवि-समान दीप्त ललाट से, और कवच-कुंडल से
पूछो उसे जो झलक रहा है मुझमें तेज-प्रकाश,
मेरे रोम-रोम में अंकित है मेरा इतिहास।"[3]

कर्ण समाजद्वारा जाति पूछे या उसका मूल्यांकन जन्म आधारित पहचान से करने को चुनौती देता है। वह कहता है—अगर तुम्हें मेरी जाति जाननी है तो मेरे बाहुबल, यानी मेरी शक्ति और शौर्य को देखो। मेरे तेज, मेरे कवच-कुंडल और दीप्तिमान ललाट से तुम मेरी असली पहचान पढ़ सकते हो। मेरी योग्यता, साहस और गौरव ही मेरा इतिहास रचते हैं, न कि जन्म-परंपरा या सामाजिक कलंक। कर्ण के माध्यम से यहाँ समाज के पारंपरिक जाति-वर्ग भेद को व्यंग्यपूर्ण चुनौती दी गई है। इससे यह ज्ञात होता है कि शक्ति, गुण, और कर्म ही किसी व्यक्ति को उसकी वास्तविक पहचान बनाते हैं—उसकी जाति नहीं। उसका इतिहास उसके व्यक्तिगत आत्ममंडल और संघर्ष में छिपा है, यही तत्व व्यक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। यह शौर्य और प्रतिभा की सामाजिक उपेक्षा पर कटाक्ष है।

"कौन जन्म लेता किस कुल में? आकस्मिक ही है यह बात,
छोटे कुल पर किन्तु, यहाँ होता तब भी कितने आघात!
हाय, जाति छोटी हो तो फिर सभी हमारे गुण छोटे,
जाति बड़ी तो बड़े वे, रहे लाख चाहे खोटे।"[4]

जाति के निर्धारण को जन्म से मात्र एक आकस्मिक घटना माना गया है, जिसका व्यक्ति की वास्तविक योग्यता और गुणों से कोई लेना-देना नहीं। बावजूद इसके, समाज जाति के नाम पर भेदभाव करता है, जहाँ छोटी जाति के लोगों के गुणों को कम महत्व दिया जाता है और बड़ी जाति वाले भले ही कम गुण वाले हों, वे अधिक महत्व पाते हैं। वास्तव में यह सामाजिक अन्याय और जाति-आधारित भेदभाव की कड़वी सच्चाई का व्यंग्यात्मक चित्रण है, जो समानता और न्याय की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

दिनकरजी ने *'रश्मिरथी'* को समाज के उस उपेक्षित वर्ग के संघर्ष और उनकी न्याय की माँग का स्वर माना है। वे इसे समकालीन सामाजिक चेतना जगाने वाली कविताओं की श्रेणी में रखते थे, जिसमें मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना की पुकार है। उन्होंने इसे न केवल एक महाकाव्य के रूप में, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज़ के रूप में देखा जो आज भी प्रासंगिक है।

"जन्म लेकर अभिशाप हुआ वरदानी,
छाया बन कर कंगाल कहलाया दानी,
दे दिए मोल जो भी जीवन ने माँगे,
सिर नहीं झुकाया कभी किसी के आगे।"[5]

महाभारत के पात्र कर्ण का जन्म एक अभिशाप की तरह था, लेकिन उसे वरदान भी मिला था। जीवन ने उससे बहुत कुछ दिया, चाहे वह त्याग या बलिदान हो, पर वह कभी भी अपने आत्म-सम्मान और स्वाभिमान को कम नहीं होने दिया। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, वह कभी किसी के सामने शीश नहीं झुकाया। यह पंक्ति कर्ण की दृढ़ता, साहस और अस्मिता को दर्शाती है, जो समस्त उपेक्षा और विषमता के बावजूद अडिग रही है। यह कथन आज के संदर्भ में संघर्षशीलता और आत्मगौरव की प्रेरणा के रूप में समझा जा सकता है।

निष्कर्ष : कहा जा सकता है कि यह शोध-निबंध समाज की दोहरी मान्यताओं, विशेषाधिकार वर्ग और उपेक्षित-पीड़ित जनों की सच्चाई को उजागर करता है। जो कर्ण की जीवनगाथा से और उसके त्रासदीपूर्ण जीवन से समन्वित है। यह खंडकाव्य हिंदी साहित्य में एक अनमोल रत्न की भाँति विद्यमान है और हमें जीवन के संघर्षों से न घबराने तथा अपने आदर्शों के प्रति संकल्पित रहने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ संकेत—

1. *रश्मिरथी*, रामधारीसिंह दिनकर, श्रीअजंता प्रेस लिमिटेड, नयाटोला, पटना–4, प्र.सं. 1952, पृ. 7–8
2. *कर्ण की आत्मकथा*, मृणु शर्मा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2014, पृ. 263
3. *रश्मिरथी*, प्रथम सर्ग, पृ. 5
4. *रश्मिरथी*, द्वितीय सर्ग, पृ. 18
5. *रश्मिरथी*, द्वितीय सर्ग, पृ. 86